Bharti Public School (School No. 65019)
Ms. Sarita Dhir
TGT – Hindi

भारती पब्लिक स्कूल

कक्षा–नवम् **उपभोक्तावाद की संस्कृति**

प्रश्न –1 लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर–**1** लेखक के अनुसार आज लोगों की दृष्टि में सुख की परिभाषा पूरी तरह बदल चुकी है। प्राचीन काल में लोग संतोष को ही परम सुख और परम धर्म मानते थे ; उनके अनुसार केवल उपभोग करना सच्चा सुख नहीं था। आधुनिक लोग बाज़ार में उपलब्ध वस्तुओं का अधिक से अधिक उपभोग करना ही सुख मानते है। आज उत्पादन बढ़ाकर यह प्रचारित किया जा रहा है कि यह उत्पादन आपके सुख के लिए है। अतः आज सुख की व्याख्या का अर्थ है —ज्यादा से ज्यादा भोग।

प्रश्न –2 आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?

उत्तर–**2** आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को निम्नलिखित तरह से प्रभावित कर रही हैः—

- हमारी मनोवृत्ति में बदलाव आने के कारण हम दिन प्रतिदिन सुखों के अभ्यस्त होते जा रहे हैं।
- हमारा चरित्र भी बदल रहा है। हम जरूरत के लिए नहीं दिखावे के लिए पहनते –ओढ़ते व खाते–पीते हैं।

- चीज़ों की गुणवत्ता पर ध्यान न देकर विज्ञापनों की चमक –दमक से प्रभावित होकर उन्हें खरीदते हैं।
- बिना सोचे–समझे चीज़ों का प्रयोग करने के कारण हमारे स्वास्थ्य,धन और मान –समान को हानि पहुँचती है।
- समाज के वर्गों में आपस में दूरियाँ बढ़ रही है। जिसके कारण गुस्सा और बेचैनी भी बढ़ रही है।

उपभोक्तावादी संस्कृति कुछ अर्थों में लाभकारी भी है जैसे ः—

- ➢ विज्ञापनों के कारण हमें नई–नई चीज़ों की जानकारी मिलती है।
- ➢ नौकरी,शिक्षा,विवाह इत्यादि में विस्तृत चुनाव व सहयोग की संभावनाएँ मिलती है।

निस्संदेह उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हमारा संपूर्ण जीवन परिवर्तित हो गया है और मनुष्य स्वार्थ केंद्रित हो गया है।

प्रश्न –3 गाँधी जी ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है?

उत्तर–3 गाँधी जी मर्यादाओं के पक्षधर थे।वह हमेशा से चाहते थे कि प्रत्येक भारतीय अपनी बुनियाद पर कायम रहे और अपनी संस्कृति को न त्यागे परंतु आज उपभोक्तावादी संस्कृति ने हमें अपनी ओर इस कदर आकर्षित किया है कि हमारी भोग प्रवृत्ति बढती जा रही है।आज हमारी नैतिकता व मर्यादाएँ अंधेरे में दफन होती जा रही है।हमें इन वस्तुओं के आकर्षण से निकलने के लिए कठोर प्रयास करना पड़ता है।दिल और दिमाग में अक्सर द्वंद्व छिड़ा रहता है इसलिए गाँधी जी ने उपभोक्तावादी संस्कृति को समाज के लिए चुनौती कहा है।

प्रश्न –4 आशय स्पष्ट कीजिएः–

क)उत्पाद को जाने –अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप समर्पित होते जा रहे हैं।

उत्तर–**4** उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव में आकर हमारा चरित्र बदल रहा है।हम उत्पादों का अनुकरण करते–करते उसके गुलाम बन गए हैं।हम उत्पादों का भोग नहीं कर रहे अपितु उत्पाद हमारे जीवन का उपभोग कर रहे हैं अर्थात् आज विज्ञापनों की झूठी चमक–दमक से आकर्षित होकर हम अपनी वास्तविकता तथा लक्ष्य से भटकते जा रहे हैं।

ख) प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं,चाहे वह हास्यास्पद ही क्यों न हो।

प्रतिष्ठा के कई रूप होते हैं जो कई बार इतने विचित्र होते हैं कि हम हँसी के पात्र बन जाते हैं।उदाहरण के तौर पर विदेशों में रहने वाले अपने मरने से पहले अपनी समाधि का प्रबंध करने लगते हैं।इसके अतिरिक्त अपने रूपाकार को ध्यान में न रखकर किसी अभिनेता या अभिनेत्री के द्वारा प्रदर्शित विशेष परिधान को पहनकर हम स्वयं को उपहास का केंद्र बना लेते हैं।उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण आज हम जरूरत न होने पर भी कुछ चीज़ों का प्रयोग करते हैं,सिर्फ और सिर्फ अपने उच्च जीवन स्तर के प्रदर्शन के लिए।

प्रश्न –5 कोई वस्तु हमारे लिए उपयोगी हो या न हो लेकिन टी.वी. पर विज्ञापन देकर हम उसे खरीदने के लिए अवश्य लालायित हो जाते है।क्यों?

उत्तर–**5** टी.वी पर आने वाले विज्ञापन बेहद प्रभावशाली ढ़ग से हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं।हमारे मन में उन वस्तुओं के प्रति आकर्षण जगाकर वह अपनी

बिक्री बढ़ाते हैं। आजकल दूरदर्शन पर कार्यक्रम कम और विज्ञापन अधिक नज़र आते हैं। दिशा–भ्रमित करने वाले यह विज्ञापन अधिकतर बच्चों व स्त्रियों को अपना शिकार बनाते हैं और इस तरह घर –घर में अपना वर्चस्व स्थापित कर अनुपयोगी वस्तुओं को बेचने का गौरव प्राप्त करते हैं।

प्रश्न –6 आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होना चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क दवारा स्पष्ट करें।

उत्तर– **6** वस्तुओं को खरीदने का एक ही आधार होना चाहिए 'वस्तु की गुणवत्ता' । विज्ञापन हमें गुणवत्ता से परिपूर्ण वस्तुओं का परिचय करवा सकते हैं परंतु अधिकतर विज्ञापन हमें भ्रम की स्थिति में ड़ाल देते हैं। वह आकर्षक दृश्य दिखाकर ,शब्दों का जाल बुनकर गुणरहित वस्तुओं को बेचने का प्रयास करते हैं। विज्ञापन के आधार पर हम वस्तुओं की गुणवत्ता की जाँच नहीं कर सकते। उदाहरण के तौर पर विज्ञापनों के अनुसार टूथपेस्ट हो या साबुन; वो हमारे दाँतों और कपड़ों को दूध से भी ज्यादा सफ़ेद बनाने का दम रखते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि सभी साबुन और सभी टूथपेस्ट ऐसा कर सकते हैं। वास्तविक स्थिति से आप और हम परिचित है,कोई एक या दो वस्तुएँ ही ऐसी गुणवत्ता रखती हैं।

प्रश्न – 7 पाठ के आधार पर आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही 'दिखावे की संस्कृति' पर विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर– **7** यह सच है कि 'दिखावे की संस्कृति' पनप रही है। पहले सौंदर्य प्रसाधन केवल स्त्रियों के लिए थे लेकिन आज पुरूष भी इस दौड़ में शामिल हैं। नए–नए परिधान और फैशन के अनुरूप वस्त्र 'दिखावे की संस्कृति' को बढ़ावा

दे रहे हैं। आज लोग समय देखने के लिए नहीं अपितु प्रतिष्ठा दिखाने के लिए हीरे मोती जड़ित घड़ियाँ पहनते हैं। यह दिखावे की संस्कृति मनुष्य को मनुष्य से दूर कर रही है। हमारे सामाजिक संबंध बिखर रहे हैं तथा हम लक्ष्य से (मानवता,सहृदयता,परिश्रम,सफलता) भटक रहे हैं। आज पैसों की खनक में रिश्ते दम तोड़ रहे हैं और मानवता तिरोहित (समाप्त) हो रही है।

प्रश्न – **8** आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे रीति रिवाजों और त्यौहारों को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?अपने अनुभव के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर– **8** आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे रीति रिवाजों और त्यौहारों को निम्नलिखित प्रकार से प्रभावित कर रही हैः–
हमारे त्यौहार और रीति–रिवाज मात्र परंपरा का चलन नहीं है अपितु हमारी नैतिकता के भी परिचायक हैं। आज हम नैतिकता से भटक कर त्यौहारों के असली महत्त्व को भूलते जा रहे हैं। त्यौहार हमारी प्रतिष्ठा के प्रदर्शन का साधन बन चुके हैं। राखी के कच्चे धागे में बंधे भाई बहन का प्यार आज उपहारों तथा पैसों के आदान प्रदान के बोझ तले सिसकियाँ ले रहा है। आज हमें दीपावली के दियों को रोशन करने की,विधि–विधान के साथ पूजा करने की इतनी जरूरत महसूस नहीं होती जितनी की उपहारों को लेने देने की। आज प्रत्येक रिश्ता,प्रत्येक त्यौहार प्रतिष्ठा की बलिवेदी पर चढ़ चुका है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि उपभोक्तावादी संस्कृति ने हमारे जीवन रस को सोख लिया है।